भावनात्मक दक्षता के संवर्धन में सहकारी अधिगम की भूमिका : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 ऐश्वर्या गिरि

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, राजकीय महिला कॉलेज, गर्दनीबाग, पटना

सार

आधुनिक शिक्षा-जगत में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना एक प्रमुख शैक्षणिक लक्ष्य बन चुका है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में सामाजिक एवं भावनात्मक दक्षता की भूमिका निरन्तर रेखांकित होती रही है। प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन का उद्देश्य यह परीक्षण करना है कि सहकारी अधिगमकिस प्रकार विद्यार्थियों की सामाजिक एवं भावनात्मक दक्षताओं को परिपुष्ट करता है। इस शोधा में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विविध शोध-ग्रन्थों, शैक्षणिक पत्रिकाओं एवं नीति-दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष उभरा कि सहकारी अधिगम की विधियाँ (जिग्सॉ, STAD- TGT तथा LT विद्यार्थियों में सहानुभूति, आत्म-नियमन, सहयोग-भावना, अन्तर्वैयक्तिक कौशल तथा संघर्ष-समाधान की क्षमता को उल्लेखनीय रूप से विकसित करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समग्र विकास सम्बन्धी दृष्टिकोण के अनुरूप यह पद्धति भारतीय कक्षाओं में अत्यन्त प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

मुख्य शब्दः सहकारी अधिगम, सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-नियमन, सहानुभूति

Recived : 14/5/2026 https://doi.org/10.5281/zenodo.21341492 Aceptance: 30/5/2026

1. प्रस्तावना

शिक्षा का प्रयोजन केवल पाठयक्रम की विषय-वस्तु का संप्रेषण नहीं है, अपितु एक ऐसे मनुष्य का निर्माण भी है जो संवेदनशील, सहयोगी तथा समाज के प्रति उत्तरदायी हो। बीसवीं शताब्दी के अन्त से और विशेष रूप से इक्कीसवीं शताब्दी में, यह अनुभव किया जाने लगा कि केवल बौद्धिक क्षमता से व्यक्ति का जीवन परिपूर्ण नहीं बनता। तकनीकी उन्नति, वैश्वीकरण एवं सामाजिक जटिलताओं के इस युग में, भावनाओं को पहचानना, समझना एवं प्रबन्धित करना उतना ही आवश्यक हो गया है जितना कि गणित या विज्ञान का ज्ञान। इसी चिन्तन की पृष्ठभूमि में सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम की अवधारणा उभरी, जो विद्यार्थी के भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास को केन्द्र में रखती है। समानान्तर रूप से सहकारी अधिगम एक ऐसी शैक्षणिक पद्धति के रूप में स्थापित हो चुकी है जिसमें विद्यार्थी लघु विविध समूहों में मिलकर साझे लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्य करते हैं। यह पद्धति न केवल अकादमिक उपलब्धि को बढ़ाती है, बल्कि विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में भी सहायक सिद्ध होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि प्रत्येक शिक्षार्थी के समग्र विकास पर ध्यान दिया जाये जिसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक कौशल एवं सहयोग-भावना का समावेश अनिवार्य है। दशा में एक केन्द्रित समीक्षात्मक विमर्श प्रस्तुत करता है।

2. सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

1. सहकारी अधिगम : परिभाषा एवं स्वरूप

सहकारी अधिगम की वैचारिक जड़ें लेव वायगोत्स्की के 'समीपस्थ विकास क्षेत्र' के सिद्धान्त में मिलती हैं। वायगोत्स्की का मत था कि बच्चा किसी अधिक दक्ष सहयोगी की सहायता से उस स्तर तक पहुँच सकता है जो उसके अकेले के बूते सम्भव नहीं होता। यह सामाजिक अन्तःक्रिया अधिगम को गहरा एवं स्थायी बनाती है।

जॉनसन एवं जॉनसन ने सहकारी अधिगम को परिभाषित करते हुए कहा कि यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें विद्यार्थी विविधतापूर्ण लघु समूहों में मिलकर एक-दूसरे की सीखने में

मदद करते हैं तथा सम्मिलित सफलता की ओर अग्रसर होते हैं। उनके अनुसार इस पद्धति के पाँच अनिवार्य तत्त्व हैं सकारात्मक अन्त:निर्भरता, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व, आमने-सामने की संवर्धक अन्त:क्रिया, अन्तर्वैयक्तिक एवं लघु-समूह कौशल तथा समूह-प्रसंस्करण। स्लेविन का मानना है कि समूह की सफलता तभी सुनिश्चित होती है जब प्रत्येक सदस्य अपना उत्तम योगदान देता है, जिससे सामूहिक उत्तरदायित्व एवं परस्पर प्रोत्साहन का वातावरण बनता है।

2. सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम : एक दृष्टि

CASEL Collaborative वित Academic, Social, and Emotional Learning ने सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम को पाँच मूल दक्षताओं में विभाजित किया है: (1) आत्म-जागरूकता अपनी भावनाओं, मूल्यों एवं शक्तियों को पहचानना (2) आत्म-प्रबन्धन -अपनी भावनाओं एवं व्यवहार को नियन्त्रित करना (3) सामाजिक जागरूकता- दूसरों के दृष्टिकोण को समझना और सहानुभूति रखना (4) सम्बन्ध-कौशल स्वस्थ सम्बन्ध स्थापित करना एवं बनाये रखना (5) उत्तरदायी निर्णय-निर्माण नैतिक एवं रचनात्मक ढंग से निर्णय लेना।

डेनियल गोलमैन ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा को लोकप्रिय बनाते हुए यह प्रतिपादित किया कि जीवन में सफलता एवं सन्तुष्टि के लिए अकेली बौद्धिक क्षमता पर्याप्त नहीं है, भावनाओं को पहचानने, समझने और उचित ढंग से व्यक्त करने की क्षमता उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। यह EL दक्षताओं का सैद्धान्तिक आधार बनती है।

3. शोध उद्देश्य:

प्रस्तुत समीक्षात्मक शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं :

1. सहकारी अधिगम की प्रमुख विधियों एवं उनकी अन्तर्निहित विशेषताओं का विश्लेषण करना।
2. सामाजिक एवं भावनात्मक दक्षता पर सहकारी अधिगम के प्रभावों का शोध-साहित्य के आधार पर परीक्षण करना।
3. सहानुभूति, आत्म-नियमन, सहयोग एवं संघर्ष-समाधान क्षमता के विकास में सहकारी अधिगम की भूमिका का निर्धारण करना।
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में सहकारी अधिगम की शैक्षणिक उपादेयता का मूल्यांकन करना।

4. शोध-विधि

प्रस्तुत शोध एक व्यवस्थित साहित्य-समीक्षा पर आधारित है, जिसमें केवल द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में किसी प्रकार का प्रत्यक्ष सर्वेक्षण या क्षेत्रीय अनुसंधान नहीं किया गया, बल्कि पहले से उपलब्ध शोध-साहित्य, पुस्तकों, शोध-पत्रें तथा नीति-दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है।

शोध सामग्री के संकलन हेतु म्त्ब्ए श्रैज्व् तथा न्ळब् - CARE सूचीबद्ध पत्रिकाओं जैसे विश्वसनीय स्रोतों का चयन किया गया। अध्ययन के लिए 2000 से 2023 के मध्य प्रकाशित प्रासंगिक अध्ययनों को आधार बनाया गया, ताकि विषय का अद्यतन एवं समकालीन विश्लेषण प्रस्तुत किया जा सके। साहित्य चयन के दौरान यह सुनिश्चित किया गया कि केवल वही अध्ययन सम्मिलित किए जाएँ जो सहकारी अधिगम और सामाजिक एवं भावनात्मक दक्षता के बीच संबंध को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं तथा जो विद्यालयी या उच्च शिक्षा स्तर से संबंधित हैं। इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन पूर्णत: द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित एक विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन है, जिसका उद्देश्य उपलब्ध शोध-साक्ष्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत करना है।

5. सहकारी अधिगम की प्रमुख विधियाँ

1. जिग्सॉ विधि: जिग्सॉ विधि की रचना एल्लिओट आरॅनसन और उनके सहयोगियों ने 1978 में की थी। इस विधि में पाठ्य-विषय को खण्डों में विभाजित किया जाता है और प्रत्येक विद्यार्थी को एक खण्ड का विशेषज्ञ बनाया जाता है। विशेषज्ञ समूह में चर्चा के बाद प्रत्येक विशेषज्ञ अपने मूल समूह में वापस लौटकर अपने साथियों को वह ज्ञान देता है। इस क्रम में विद्यार्थी न केवल विषय-सामग्री को गहराई से आत्मसात् करते हैं, बल्कि उनमें श्रवण-कौशल, सहनशीलता, दूसरों को समझाने की क्षमता तथा परस्पर सम्मान का भाव भी पुष्ट होता है। शोधों ने दर्शाया है कि इस विधि से विद्यार्थियों में पूर्वाग्रह कम होता है और विविधता के प्रति

स्वीकृति का भाव बढ़ता है।

2. STAD विद्यार्थी दल उपलब्धि विभाजन विधि

रॉबर्ट स्लेविन द्वारा विकसित STAD (Student Teams Achievement Divisions) एक प्रभावी सहकारी अधिगम विधि है, जिसमें विद्यार्थियों को चार से पाँच सदस्यों वाले विषम (विविध) समूहों में विभाजित किया जाता है। इस पद्धति में सर्वप्रथम शिक्षक विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण करता है, तत्पश्चात् विद्यार्थी अपने-अपने समूहों में मिलकर अभ्यास-कार्य करते हैं। इसके बाद प्रत्येक विद्यार्थी व्यक्तिगत रूप से परीक्षण में भाग लेता है। इस विधि की विशेषता यह है कि समूह का मूल्यांकन विद्यार्थियों के प्राप्तांक के आधार पर नहीं, बल्कि उनके व्यक्तिगत प्रगति स्तर के आधार पर किया जाता है। अर्थात् प्रत्येक विद्यार्थी अपने पूर्व प्रदर्शन की तुलना में जितना सुधार करता है, वही समूह के कुल प्रदर्शन में योगदान देता है। यह व्यवस्था सभी विद्यार्थियों को सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है तथा समूह के प्रत्येक सदस्य में उत्तरदायित्व-बोध विकसित करती है। परिणामस्वरूप, विद्यार्थियों में सहयोग, पारस्परिक सहायता, टीम-भावना एवं प्रोत्साहन की भावना सुदृढ़ होती है, जो उनके सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में सहायक सिद्ध होती है।

3. TGT दल-खेल-प्रतियोगिता विधि

टीजीटी विधि सहकारी अधिगम की एक प्रमुख तकनीक है, जो संरचना की दृष्टि से STAD के समान होती है, किन्तु इसके क्रियान्वयन में एक महत्वपूर्ण भिन्नता पायी जाती है। इस पद्धति में व्यक्तिगत प्रश्नोत्तरी के स्थान पर समय-समय पर प्रतियोगितात्मक खेल (टूर्नामेंट) आयोजित किए जाते हैं, जिनमें समान क्षमता स्तर के विद्यार्थी एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। इस विधि के माध्यम से अधिगम को रोचक एवं सहभागितापूर्ण बनाया जाता है। विद्यार्थी खेल-आधारित गतिविधियों के माध्यम से विषय-वस्तु का अभ्यास करते हैं, जिससे उनकी संलग्नता और उत्साह में वृद्धि होती है। साथ ही, यह पद्धति विद्यार्थियों में खेल-भावना, नियमों के प्रति सम्मान, सफलता एवं असफलता को संतुलित दृष्टिकोण से स्वीकार करने की प्रवृत्ति तथा भावनात्मक नियंत्रण जैसी महत्वपूर्ण दक्षताओं का विकास करती है।

4. LT सह-अधिगम या 'लर्निंग टुगेदर' विधि

'लर्निंग टुगेदर' विधि का प्रतिपादन जॉनसन एवं जॉनसन द्वारा किया गया, जो सहकारी अधिगम की एक सुव्यवस्थित एवं संरचित पद्धति है। इस विधि में विद्यार्थियों को छोटे-छोटे समूहों में संगठित किया जाता है, जहाँ वे मिलकर एक साझा कार्य या कार्यपत्र को पूर्ण करते हैं। इस पद्धति का आधार पाँच प्रमुख तत्त्वों पर आधारित है सकारात्मक परस्पर निर्भरता, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व,आमने-सामने की अंत:क्रिया, अंतर्वैयक्तिक कौशल तथा समूह-प्रसंस्करण। इन तत्त्वों के माध्यम से विद्यार्थियों में सहयोगात्मक व्यवहार का विकास होता है। यह विधि विशेष रूप से विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता, स्वस्थ संबंधों की स्थापना, पारस्परिक सम्मान तथा उत्तरदायी व्यवहार के विकास में अत्यंत प्रभावी मानी जाती है। इसके माध्यम से विद्यार्थी न केवल विषय-वस्तु का अधिगम करते हैं, बल्कि सामाजिक एवं भावनात्मक दृष्टि से भी परिपक्व होते हैं।

6. सामाजिक एवं भावनात्मक दक्षता में सहकारी अधिगम की भूमिका

1. सहानुभूति एवं सामाजिक जागरूकता

सहकारी अधिगम का सबसे सशक्त योगदान सहानुभूति के विकास में है। विविध पृष्ठभूमि, दृष्टिकोण एवं क्षमताओं वाले साथियों के साथ कार्य करते हुए विद्यार्थी परिप्रेक्ष्य-ग्रहण की क्षमता विकसित करते हैं। जब एक विद्यार्थी अपने साथी की कठिनाई को समझता है और उसकी मदद करता है, तो वह अनजाने ही भावनात्मक संवेदनशीलता का अभ्यास कर रहा होता है। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि नियमित सहकारी अधिगम के अनुभव से विद्यार्थियों में सहानुभूति के मापन में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। भारतीय माध्यमिक विद्यालयों में किये गये अध्ययनों ने भी इस प्रवृत्ति की पुष्टि की है।

2. आत्म-नियमन एवं भावनात्मक प्रबन्धन

समूह-कार्य में विद्यार्थी अनेक ऐसी परिस्थितियों का सामना करते हैं जो उनकी भावनात्मक दक्षता की परीक्षा लेती हैं। मतभेद, निराशा, प्रतीक्षा, दूसरों की आलोचना स्वीकार करना। ये परिस्थितियाँ उन्हें अपनी भावनाओं को पहचानने, उन्हें उचित ढंग से व्यक्त करने तथा आवश्यक होने पर स्थगित करने का अभ्यास कराती हैं। इस प्रकार का स्व-नियमन (Self & Regulation) भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक मूलभूत घटक है। जब विद्यार्थी यह सीखते हैं कि क्रोध या असहमति को रचनात्मक ढंग से व्यक्त करना सम्भव है, तो वे जीवन

के लिए एक अत्यन्त मूल्यवान दक्षता अर्जित करते हैं।

3. अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध एवं संघर्ष-समाधान

शोधों ने बार-बार यह प्रमाणित किया है कि सहकारी अधिगम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मक या व्यक्तिवादी अधिगम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक सकारात्मक एवं स्थायी अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध विकसित होते हैं। वे एक-दूसरे के प्रति अधिक समर्थन-उन्मुख, कम पूर्वाग्रही तथा अधिक सहयोगी होते हैं। इसके साथ ही, समूह-कार्य में उत्पन्न होने वाले संघर्षों को बातचीत एवं परस्पर सम्मान के माध्यम से सुलझाना सीखते हुए विद्यार्थी संघर्ष-समाधान के व्यावहारिक कौशल अर्जित करते हैं। यह कौशल उनके भावी व्यावसायिक एवं पारिवारिक जीवन में भी अत्यन्त उपयोगी होता है।

4. आत्म-सम्मान एवं आत्मविश्वास

सहकारी अधिगम में प्रत्येक विद्यार्थी की एक परिभाषित भूमिका होती है। जब वह अपनी भूमिका सफलतापूर्वक निभाता है और समूह की सफलता में अपना योगदान देखता है, तो उसके आत्म-सम्मान में स्वाभाविक वृद्धि होती है। पारम्परिक प्रतिस्पर्धात्मक कक्षाओं में निम्न-उपलब्धि वाले विद्यार्थी प्रायः स्वयं को हीन एवं अपर्याप्त अनुभव करते हैं। सहकारी अधिगम उन्हें वह स्थान प्रदान करता है जहाँ उनका योगदान मूल्यवान होता है और उनकी विशेष प्रतिभा को पहचाना जाता है। विभिन्न शोध-अध्ययनों ने यह प्रमाणित किया है कि सहकारी अधिगम से कमजोर विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान एवं आत्म-प्रभावकारिता में उल्लेखनीय सुधार होता है।

5. नैतिक मूल्यों का विकास

समूह में कार्य करने की प्रक्रिया विद्यार्थियों को ईमानदारी, उत्तरदायित्व, न्यायप्रियता एवं परस्पर सम्मान जैसे नैतिक मूल्यों को स्वाभाविक रूप से आत्मसात् करने का अवसर देती है। जब विद्यार्थी यह अनुभव करते हैं कि उनकी बेईमानी या लापरवाही से पूरे समूह को हानि होती है, तो वे नैतिक उत्तरदायित्व का बोध विकसित करते हैं। यह नैतिक जागरूकता SEL दक्षताओं का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है और इसे कक्षा-उपदेश से नहीं, बल्कि अनुभव से ही अर्जित किया जा सकता है।

7. भारतीय शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में सहकारी अधिगमः

भारतीय शिक्षा-परम्परा में सामूहिक अधिगम की जड़ें अत्यन्त गहरी हैं। प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था में शिष्य मिलकर पठन, मनन एवं चर्चा करते थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शान्ति निकेतन में प्रकृति की गोद में जो सामूहिक एवं अनुभव-केन्द्रित शिक्षा-पद्धति प्रारम्भ की, उसे आधुनिक सहकारी अधिगम का पूर्वाभास कहा जा सकता है। महात्मा गाँधी की बुनियादी शिक्षा में भी सामूहिक उत्पादन एवं सहयोग के तत्त्व निहित थे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 21वीं सदी के कौशल सहयोग, संचार ए रचनात्मकता एवं आलोचनात्मक चिन्तन के विकास पर बल दिया गया है। ये चारों कौशल सहकारी अधिगम के स्वाभाविक परिणाम हैं। नीति में यह भी स्पष्ट किया गया है कि विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक-भावनात्मक दक्षताओं को औपचारिक रूप से स्थान मिलना चाहिए।

NCERT की राष्ट्रीय पाठयचर्या रूपरेखा 2023, (NCF & 2023) में भी समूह-कार्य, परियोजना-आधारित अधिगम एवं सहयोगात्मक गतिविधियों को प्राथमिकता दी गयी है। यह माना गया है कि विद्यार्थी तब सर्वाधिक एवं स्थायी रूप से सीखते हैं जब वे अपने साथियों के साथ संवाद, प्रश्नोत्तर एवं सहयोगपूर्ण गतिविधियों में सहभागी होते हैं। भारत के विभिन्न राज्यों में किये गये क्षेत्रीय अध्ययनों ने भी यह सिद्ध किया है कि सहकारी अधिगम पद्धतियों के नियमित उपयोग से विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

8. सहकारी अधिगम की सीमाएँ एवं चुनौतियाँ

सहकारी अधिगम के व्यापक लाभों के बावजूद इसके क्रियान्वयन में कतिपय व्यावहारिक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं।

प्रथम, 'सामाजिक आलस्य की समस्या प्रायः देखी जाती है, जिसमें कुछ विद्यार्थी समूह-कार्य में अपना समुचित योगदान नहीं देते और परिश्रमी साथियों पर निर्भर रहते हैं। द्वितीय, शिक्षक की परम्परागत भूमिका में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता होती है। उन्हें 'ज्ञान-प्रदाता' से 'सुगमकर्ता' की भूमिका में आना पड़ता है, जो बिना प्रशिक्षण के कठिन हो सकता है। तृतीय, व्यक्तिगत उत्तरदायित्व एवं सामूहिक मूल्यांकन के मध्य उचित सन्तुलन बनाना एक जटिल कार्य है। चतुर्थ, बड़ी कक्षाओं में समूह-प्रबन्धन और अनुशासन बनाये रखना व्यावहारिक कठिनाई उत्पन्न करता है। पंचम, यदि समूहों का गठन सोच-समझकर न किया जाये तो मौजूदा सामाजिक पूर्वाग्रह अधिक प्रबल हो सकते हैं। इन चुनौतियों का समाधान सुनियोजित शिक्षक-प्रशिक्षण, स्पष्ट भूमिका-निर्धारण, संरचित समूह-गठन तथा नियमित रचनात्मक प्रतिपुष्टि के माध्यम से किया जा सकता है।

9. निष्कर्षः

सहकारी अधिगम के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों को इसकी विधियों एवं समूह-प्रबन्धन में विधिवत् प्रशिक्षण दिया जाये। प्रत्येक समूह में भूमिकाओं का स्पष्ट विभाजन 'प्रस्तुतकर्ता, रिकॉर्डर, प्रोत्साहक, समय-पालक' किया जाये। सामाजिक एवं भावनात्मक कौशलों का मूल्यांकन भी अकादमिक उपलब्धि के साथ-साथ किया जाए। राज्य सरकारें एवं NCERT सहकारी अधिगम को विद्यालयी पाठयक्रम का एक औपचारिक एवं संरचित अंग बनायें। SEL आधारित मूल्यांकन प्रपत्र विकसित किये जायें। शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में सहकारी अधिगम की प्रविधियों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाये।

प्रस्तुत समीक्षात्मक अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सहकारी अधिगम, सामाजिक एवं भावनात्मक दक्षता के संवर्धन में एक सिद्ध, बहुआयामी एवं भारतीय शैक्षणिक मूल्यों के अनुरूप पद्धति है। यह विद्यार्थियों में सहानुभूति, आत्म-नियमन, सकारात्मक सम्बन्ध, संघर्ष-समाधान-क्षमता, आत्म-सम्मान एवं नैतिक जागरूकता को एक साथ विकसित करती है। NEP 2020 की भावना के अनुरूप यह पद्धति विद्यार्थियों को न केवल परीक्षा-उत्तीर्ण करने, बल्कि जीवन में सफलतापूर्वक सहयोग करने, संवाद करने एवं संवेदनशीलता के साथ निर्णय लेने में सक्षम बनाती है। भारतीय दर्शन का **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** का आदर्श तब साकार होगा जब हमारी कक्षाएँ सहयोग, सम्मान एवं संवेदना की प्रयोगशालाएँ बनेंगी। सहकारी अधिगम इस दिशा में एक ठोस, प्रमाण-समर्थित एवं व्यावहारिक कदम है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. अरोरा, सुनीता (2019), सहकारी अधिगम एवं सामाजिक विकास। नई दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास। (पृ. 45-67)
2. आरॅनसन, एल्लिओट एवं पटनो, एस.(1997). द जिग्सॉ क्लासरूम : बिल्डिंग कोऑपरेशन इन द क्लासरूम (द्वितीय संस्करण)। न्यूयॉर्क ऐडिसन वेस्ले लॉगमैन। (पृ. 47)
3. उपाध्याय, प्रेमचन्द (2017) शिक्षा मनोविज्ञान एवं अधिगम सिद्धान्त। आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर। (पृ. 198-215)
4. गिलीज, रॉबिन (2016), सहकारी अधिगमः शोध-समीक्षा एवं व्यवहार। ऑस्ट्रेलियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन, 41(3), 98-114। (पृ. 107)
5. जॉनसन, डेविड डब्ल्यू. एवं जॉनसन, रोजर टी. (1989), सहयोग एवं प्रतिस्पर्धा सिद्धान्त एवं शोध। एडिना, एम. एन.: इन्टरैक्शन बुक कम्पनी। (पृ. 23-45)
6. जॉनसन, डेविड डब्ल्यू. एवं जॉनसन, रोजर टी. (2014), 21वीं सदी में सहकारी अधिगम। एनालेस डे सिकोलोजिया, 30(3), 841-851। (पृ. 34)
7. जोशी, मीनाक्षी (2020),भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षणिक उपलब्धिः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन। भारतीय शैक्षिक समीक्षा, 58 (2), 45-62। (पृ. 53)
8. त्रिपाठी, राजेन्द्र कुमार (2020), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सहकारी अधिगम का सामाजिक-भावनात्मक दक्षता पर प्रभाव। शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 22 (3), 230-245। (पृ. 234)
9. देवी, राधा एवं पन्त, सुषमा (2021). प्राथमिक विद्यालयों में सहकारी अधिगम का क्रियान्वयनः अवसर एवं चुनौतियाँ। प्राथमिक शिक्षक, 46(1),18-29।(पृ. 22)
10. पाण्डेय, विनोद एवं मिश्र, अर्चना (2021), सहकारी अधिगम, आत्म-सम्मान एवं शैक्षिक उपलब्धिः एक तुलनात्मक अध्ययन। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 15(1),138-152। (पृ. 145)
11. वर्मा, अनुपमा (2018), सहकारी अधिगम एवं सामाजिक कौशल विकास : एक समीक्षात्मक दृष्टि। शिक्षा विमर्श, 9(4), 67-79। (पृ. 71)
12. शर्मा, कमलेश एवं यादव, रमेश (2019), सहकारी अधिगम विधियाँ एवं उनका शैक्षणिक महत्त्व। नई दिल्ली : अग्रवाल पब्लिकेशन्स। (पृ. 55-78)
13. सिंह, रविन्द्र एवं श्रीवास्तव, प्रमोद (2018), सहानुभूति विकास में सहकारी अधिगम की भूमिका। शिक्षा एवं मनोविज्ञान शोध पत्रिका, 9 (2), 85-95। (पृ. 89)
14. स्लेविन, रॉबर्ट ई. (1995), सहकारी अधिगम : सिद्धान्त, शोध एवं व्यवहार (द्वितीय संस्करण)। बोस्टन : एल्विन एवं बेकन। (पृ. 73, 89)
15. NCERT (2023), राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा विद्यालयी शिक्षा (NCF & SE 2023)। नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्। (पृ.34-48)